प्रेरक गीत

"बिहान"

छत्तीसगढ़ राज्य ग्रामीण आजीविका संवर्धन समिति

कक्ष क्र. 04, ब्लॉक 04, प्रथम तल,

इंद्रावती भवन,

नया रायपुर (छत्तीसगढ़)

वेबसाईट : **www.bihan.gov.in**

प्राक्कथन

आज सामाजिक बदलाव के क्षेत्र में संलग्न व्यक्तियों, समूहों एवं संस्थाओं द्वारा गीतों का रणनीतिक उपयोग, समुदाय में काम करने की प्रेरणा, प्रोत्साहन, स्फूर्ति एवं उम्मीद जगाने के लिए किया जाता है। गीतों का स्पर्श व्यक्ति के दिल तक होता है। फलस्वरूप व्यक्ति अपने अंदर से जुड़ने की प्रक्रिया में सम्मिलित होता है तथा यह जुड़ाव लम्बे समय तक रहता है। यह प्रक्रिया व्यक्ति से व्यक्ति एवं व्यक्ति को समूह से जोड़ने में सहजता एवं सरलता प्रदान करती है। इसी प्रक्रिया को ध्यान में रखकर प्रशिक्षण में गीतों का उपयोग सीखने के लिए वातावरण के निर्माण एवं सीखने के आसान तरीके के रूप में किया जाता है। गीतों के माध्यम से सिखाई गई कठिन चीज भी आसान हो जाती है। गीत बच्चे–बड़े सभी की जूबान पर आसानी से रह जाती है और गीतों को लगातार गाते रहने से कब वह हमारे मानसिक स्तर से निकलकर हमारे व्यवहार में शामिल हो जाता है, इसका पता भी नहीं लगता है।

इसलिए प्रशिक्षणों में विषयान्तर करने या सीखने का माहौल बनाने के लिए गीतों का उपयोग किया जाता है। इसी उद्देश्य पूर्ति हेतु ''बिहान'' द्वारा कुछ चुनिंदा गीतों का संकलन कर प्रकाशन किया जा रहा है।

गीत सूची

क्रमांक	गीत का नाम	पृष्ठ क्रं
1	वन्दे मातरम	4
2	ऐ मालिक तेरे बन्दे हम	4
3	इतनी शक्ति हमें देना दाता	5
4	ले मशालें चल पड़े हैं	5
5	मैं तुमको विश्वास दूँ	6
6	गरीबी से लड़ने वाले चलों साथ हमारे	6
7	किसी के काम जो आये	7
8	वह शक्ति हमें दो दयानिधे	7
9	छोटी–छोटी बातों पर विचार होना चाहिए	8
10	हम लोग हैं ऐसे दीवाने	8
11	जब तक रोटी के प्रश्नों पर	9
12	तुम ही हो माता	9
13	जीवन मे कुछ करना हैं	10
14	जब बन ही गया बहनों का संगठन	10
15	वन्दनम – वन्दनम	11
16	हम बदले तो, ये जग बदलेगा	11
17	घड़ी–घड़ी मुसीबतें	12
18	गांव जगना चाहिए	12
19	भाई सुनो बहन सुनो	13
20	बहना मिलकर समूह बनाना	13
21	महिला संगठन बनाओ	14
22	ये समूह हमारी	14
23	नशा न करना मान लो कहना	15
24	हम होंगे कामयाब	15
25	मेरा समूह बड़ा प्यारा	16
26	कभी राम बनके, कभी श्याम बनके।	17
27	घर घर अलख जगाएंगे,	17
28	जनम जनम का साथ है	18
29	इसलिये राह संघर्ष की हम चुने,	18
30	गीत गा रहे हैं आज हम	19
31	मन्दिर मस्जिद गिरजाघर	19
32	मुँह सी के अब जी न पाउंगी	20
33	जन गण मन	20
34	ओ लालो.... ओ लालो	21
35	प्रकाशमय जीवन को विश्वासपूर्ण साथ	22
36	हमको मन की शक्ति	22
37	करें राष्ट्र–निर्माण	23
38	तोड़–तोड़ बन्धनों को	24
39	लहू का रंग एक	24
40	साथ–साथ चलेंगे	25
41	समूह के उत्साहवर्धक नारे	26–28

राष्ट्रगीत : वन्देमातरम

वन्दे मातरम वन्दे मातरम

सुजलाम सुफलाम मलयज शीतलाम

शस्यश्यामलाम मातरम ।। वन्दे मातरम ।।

शुभ्र ज्योत्स्ना – पुलकित यामिनिम

फुल्ल कुसुमित – द्रुमदल – शोभिनीम

सुहासिनीम सुमधुर भाषिणीम

सुखदाम वरदाम मातरम ।। वन्दे मातरम ।।

ऐ मालिक तेरे बन्दे हम

ऐ मालिक तेरे बन्दे हम, ऐसे हो हमारे करम।
नेकी पर चले और बदी से डर, ताकि हंसते हुए निकले दम।
ऐ मालिक तेरे बन्दे हम .....

बड़ा कमजोर है आदमी, अभी लाखों है इसमें कमी।
पर तू जो खड़ा, है दयालु बड़ा, तेरी कृपा से धरती बनी।
दिया तूने हमें जब जनम, तू ही ले लेगा हम सब के गम।
नेकी पर चले और बदी से डर, ताकि हंसते हुए निकले दम।
ऐ मालिक तेरे बन्दे हम .....

ये अंधेरा घना छा रहा, तेरा इंसान घबरा रहा।
हो रहा बेखबर, कुछ न आता नजर, सुख का सूरज छुपा जा रहा।
है तेरी रोशनी में जो दम, तू अमावस को कर दे पूनम।
नेकी पर चले और बदी से डर, ताकि हंसते हुए निकले दम।
ऐ मालिक तेरे बन्दे हम .....

जब जुल्मों का हो सामना, तब तू ही हमें दे थामना।
वो बुराई करे, हम भलाई करें, नहीं बदले की हो कामना।
बढ़ उठे प्यार का हर कदम, और मिटे बैर का ये भरम।
नेकी पर चले और बदी से डर, ताकि हंसते हुए निकले दम।
ऐ मालिक तेरे बन्दे हम .....

इतनी शक्ति हमें देना दाता

इतनी शक्ति हमें देना दाता, मन का विश्वास कमजोर हो ना।
हम चले नेक रस्ते पर हमसे, भूलकर भी कोई भूल हो ना।
इतनी शक्ति हमें .....

दूर अज्ञान के हो अंधेरे, तू हमें ज्ञान की रोशनी दे।
हर बुराई से बचते रहे हम, जितनी भी दे भली जिन्दगी दे।
बैर हो ना किसी का किसी से, भावना मन में बदले की हो ना।
हम चले नेक रस्ते पर हमसे, भूलकर भी कोई भूल हो ना।
इतनी शक्ति हमें .....

हम न सोंचे हमें क्या मिला हैं, हम ये सोचें किया क्या हैं अर्पण।
फूल खुशियों के बॉटे सभी को, सबका जीवन ही बन जाये मधुबन।
अपनी करूणा का जल तू बहा के, कर दे पावन हर इक मन का कोना।
हम चले नेक रस्ते पर हमसे, भूलकर भी कोई भूल हो ना।
इतनी शक्ति हमें .....

ले मशालें चल पड़े हैं

ले मशालें चल पड़े हैं, लोग मेरे गॉव के।
अब अंधेरा जीत लेंगें, लोग मेरे गॉव के।
ले मशालें चल .....

पूछती है झोंपड़ी और पूछते हैं खेत भी।
कब तलक लुटते रहेंगें, लोग मेरे गांव के।
ले मशालें चल .....
बिन लड़े कुछ भी यहां मिलता नही यह जानकर।
अब लड़ाई लड़ रहे हैं, लोग मेरे गॉव के।
ले मशालें चल .....

चीखती है हर रूकावट ठोंकरों की मार से।
बेड़िया खनका रहे हैं, लोग मेरे गॉव के।
ले मशालें चल .....
देखो यारो जो सुबह लगती थी फीकी आजतक।
लाल रंग उसमें भरेंगें, लोग मेरे गॉव के।
ले मशालें चल .....
लाल सूरज अब उगेगा, देश के हर गांव में।
अब इकटठे हो चलें हैं, लोग मेरे गांव के।
ले मशालें चल .....

मैं तुमको विश्वास दूं

मैं तुमको विश्वास दूँ, तुम मुझको विश्वास दो।
शंकाओं के सागर हम लंघ जाऐंगें। मरूधरा को मिलकर स्वर्ग बनाऐगें।

प्रेम बिना यह जीवन तो अनजाना हैं, सब अपने है, कौन यहॉ बेगाना है।
हर पल अपना अर्थवान हो जाएगा, बस थोड़ा सा मनमे प्यार जगाना हैं।
इस जीवन को साज दो, मौन नही आवाज दो।
पाषाणों से मीठी प्यास जगाऐगें, मरूधरा को मिलकर स्वर्ग बनाऐगें।

अलगावों से आग सुलगने लगती है, उपवन की हर शाख सुलगने लगती हैं।
हर आंगन में सिर्फ सिसकियां उठती हैं, संबंधों की सांस उखड़ने लगती हैं।
द्वेश भाव को त्याग दो, बस सबको अनुराग दो।
सन्नाटों से हम सरगम बन जाऐगें, मरूधरा को मिलकर स्वर्ग बनाऐगें।

ढूंढ सको तो इस माटी मे सोना हैं, हिम्मत का हथियार नही बस खोना हैं।
मुस्का दो तो हर मौसम मस्ताना हैं, बीत गया जो समय उसे क्या रोना हैं।
लो हाथो में हाथ लो, एक दूजे का साथ दो।
इस धरती का सोया प्यार जगाऐगें, मरूधरा को मिलकर स्वर्ग बनाऐगें।

गरीबी से लड़ने वाले चलो साथ हमारे

गरीबी से लड़ने वाले चलों साथ हमारे, सुरज चांद सितारे चलो साथ हमारे।
साथ चलो तो बहना हिम्मत आये, डरते है बेईमान सारे, चलो साथ हमारे।
गरीबी से लड़ने वाले.....

साथ चलो तो बहना बनते हैं काम, भागते है दुखड़े सारे, चलो साथ हमारे।
गरीबी से लड़ने वाले.....

साथ चलो तो है बहना हटती हैं गरीबी, होंगे काम हमारे चलो साथ हमारे
गरीबी से लड़ने वाले.....

साथ चलेंगें बहना साथ बढ़ेगें, औरत बच्चे सारे, चलो साथ हमारे।
गरीबी से लड़ने वाले चलों साथ हमारे, सूरज चांद सितारे चलो साथ हमारे।

किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं

किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते है।
पराया दर्द अपनाये उसे इन्सान कहते हैं।

कोई धनवान हैं कितना, कोई इन्सान है निर्धन ।
कभी सुख है, कभी दुख है, इसी का नाम हैं जीवन।
जो मुश्किल में न घबराये, उसे इन्सान कहते है।
पराया दर्द अपनाये उसे इन्सान कहते हैं।

ये दुनिया एक उलझन है, कहीं धोखा कहीं ठोकर।
कोई हॅस–हॅस कर जीता हैं, कोई जीता है रो–रोकर।
जो गिर कर भी संभल जाये, उसे इन्सान कहते है।
पराया दर्द अपनाये उसे इन्सान कहते है।

अगर गलती रूलाती हैं, तो फिर भी राह दिखाती है।
ये मानव गलती का पुतला है, ये अक्सर हो ही जाती है।
जो गलती कर सुधर जाये, उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाये उसे इन्सान कहते हैं।

यूँ भरने को तो दुनिया में, पशु भी पेट भरते हैं।
मगर जो बाट कर खाये, उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाये उसे इन्सान कहते हैं।
किसी के काम जो आये उसे इन्सान कहते है।

वह शक्ति हमें दो दयानिधे

वह शक्ति हमें दो दयानिधे, कर्तव्य मार्ग पर डट जावें ।।
पर सेवा पर उपकार में हम, जग जीवन सफल बना जावें।।

हम दीन दुखी निर्बलों बिकलों, के सेवक बन सन्ताप हरें।।
जो हैं अटके भूले भटके, उनको तारे खुद तर जावें।।

छल, दम्भ, देश, पाखंड, झूठ, अन्याय से निषदिन दूर रहें।।
जीवन हो शुद्ध सरल अपना, शुचि प्रेम सुधा रस बरसावें।।

निज आन मान मर्यादा का, प्रभु ध्यान रहे अभिमान रहें।।
जिस देश में हमने जन्म लिया, बलिदान उसी पर हो जावें।

वह शक्ति हमें दो दयानिधे, कर्तव्य मार्ग पर डट जावें ।।
पर सेवा पर उपकार में हम, जग जीवन सफल बना जावें।।

छोटी–छोटी बातों पर विचार होना चाहिए

छोटी–छोटी बातों पर विचार होना चाहिए ।2।
आदमी को आदमी से प्यार होना चाहिए।2।

खेत–खलिहान का अजीब हाल–चाल हैं, चारों तरफ फैला परेशानियों का जाल हैं।
परेशानियों का जाल तार–तार होना चाहिए, आदमी को आदमी से प्यार होना चाहिए।

हाथ में हाथ साथ, सच की मशाल हैं, आंधियों से रोशनी बचाने का सवाल हैं।
एक–दूसरे पर एतबार होना चाहिए, आदमी को आदमी से प्यार होना चाहिए।

आधे में हैं बेटा, फिर भी आधे में का आधा, कही–कही आधे में के आधे मे भी बाधा है।
महिलाओं का पूरा अधिकार होना चाहिए, आदमी को आदमी से प्यार होना चाहिए।

सच बोलने का एक विचार होना चाहिए
आदमी को आदमी से प्यार होना चाहिए।
छोटी–छोटी बातों पर विचार होना चाहिए ।2।
आदमी को आदमी से प्यार होना चाहिए।2।

हम लोग हैं ऐसे दीवाने

हम लोग हैं ऐसे दीवाने, दुनिया को बदलकर मानेगें
मंजिल की धुन में आयें हैं, मंजिल को पाकर मानेगें।
हम लोग हैं ऐसे .....

दो दिन की बहारें हैं जग में, जब जुल्म किसी का चलता हैं।
जो जुल्म का सूरज लाख तपे, हर शाम तो लेकिन ढ़लता हैं।
नफरत के शोले दिल में हैं, हम उनको बुझाकर मानेगें।
मंजिल की धुन में आये हैं, मंजिल को पाकर मानेंगें।

सच्चाई की खातिर दुनियॉ में, गांधी ने गोली खाई थी।
सरदार चढ़ा था सूली पर, बच्चों ने जान गॅवाई थी।
हम भी तो किसी से कम तो नही, तूफान उठाकर मानेगें।
मंजिल की धुन में आये हैं, मंजिल को पाकर मानेगें।

जो लक्ष्य हो अपना पूरा हो, उस वक्त तसल्ली पायेंगें।
ऐसे तो नही टलनेवाले, हम आगे बढते जायेगें।
इस दिल मे हजारो मौजे हैं, तूफान उठाकर मानेगें।
मंजिल की धुन में आयें हैं, मंजिल को पाकर मानेगें।
हम लोग है ऐसे .....

जब तक रोटी के प्रश्नों पर

जब तक रोटी के प्रश्नों पर, लदा रहेगा भरी पत्थर।
जब तक रोटी के प्रश्नों पर, लदा रहेगा भरी पत्थर।
कोई ख्वाब मत सजाना तुम, मेरी गली में।
मेरी खुशी खोजते अगर कही जो, आना तुम।

धानों की बालियों में टपका हुआ पसीना, सोचों तो इसकी बूंदे मोती या नगीना।
भूखे रधिया और बिसेसर जिसका लहू गिरा धरती पर।
जब तक बच्चे भूखे रहते, खेत भी इनके सूखे रहते ।
मेंहदी नही रचाना तुम। मेरी गली मे खुशी .....

चंदा के बदले हमको रातें मिली है काली, है इस तरफ अंधेरा और उस तरफ दिवाली।
जब तक सूरज नही उगा ले, चांद को न वापस पा लें।
टिकली नही लगाना तुम। मेरी गली मे खुशी .....

हाथों को काट ले हम ऐसी भी क्या जवानी, मोहताज न हो जाये आकाश जैसा दानी।
जब तक आँसू यहां मचलते अंगारों में भी नही बदलते।
काजल नही लगाना तुम। मेरी गली मे खुशी .....

इतिहास बेंड़ियों मे जकड़ा अभी हुआ है, पिजड़े में जिन्दगी का बन्दी हुआ सुआ हैं।
जब तक ना ये बन्दी छूटे और बेड़ियां भी ना टूटे।
पायल नही बजाना तुम। मेरी गली मे खुशी .....

तुम्हीं हो माता–पिता तुम ही हो

तुम ही हो माता, पिता तुम ही हो।
तुम ही हो बन्धु, सखा तुम्ही हो

तुम ही हो साथी तुम्हीं सहारे।
कोई न अपना सिवा तुम्हारे।
तुम ही हो नैया तुम्हीं हो खेवइया।
तुम ही हो बन्धु, सखा तुम्हीं हो।
तुम ही हो माता, पिता तुम्हीं हो।
तुम ही हो बन्धु, सखा तुम्हीं हो।
जो खिल सके ना, वो फूल हम हैं।
तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं।
दया की दृष्टि, सदा ही रखना।
तुम ही हो बन्धु सखा तुम्हीं हो।
तुम ही हो माता, पिता तुम्हीं हो
तुम ही हो बन्धु, सखा तुम्हीं हो।

जीवन मे कुछ करना है

जीवन मे कुछ करना हैं, तो मन को मारे मत बैठो।
आगे आगे बढ़ना हैं, तो हिम्मत हारे मत बैठो।

चलने वाला मंजिल पाता, बैठा पीछे रहता हैं।
ठहरा पानी सड़ने लगता, बहता निर्मल होता हैं।
पांव मिले चलने के खातिर, पांव पसारे मत बैठो।
जीवन मे कुछ करना हैं, तो मन को मारे मत बैठो।

तेज दौड़ने वाला खरहा, दो पग चलकर हार गया।
धीरे–धीरे चलकर कछुआ, देखो बाजी मार गया।
चलो कदम से कदम मिलाकर, दूर किनारे मत बैठो।
जीवन मे कुछ करना हैं, तो मन को मारे मत बैठो।

धरती चलती, तारे चलते, चांद रात भर चलता है।
किरणों का उपहार बाटने, सूरज रोज निकलता है।
हवा चले महक बिखेरे, तुम भी प्यारे मत बैठो।
जीवन मे कुछ करना हैं, तो मन को मारे मत बैठो।

जब ही बन गया बहनों का संगठन

जब बन ही गया बहनों का संगठन,
इसको मजबूत करने का वादा करो।

चार दिन की सहेली, सहेली नही।
उम्र भर साथ दने का वादा करो।

औरतों के सवालों पर आकर सभी।
खूब चर्चा चलाने का वादा करो।
औरतों को कुछ भी मुश्किल नहीं।
ऐसी हिम्मत जगाने का वादा करो।

दुःख कोई बहन पर अगर आ पड़े।
प्यार की छांव देने का वादा करो।
जब बन ही गया बहनों का .....

वन्दनम – वन्दनम सब जनको

वन्दनम – वन्दनम सब जनको।
अभिवन्दनम वन्दनम प्रियजन को।
बदले हुए गांवो को बदलने वाला को।
वन्दनम – वन्दनम .....

बहुत दूर में पड़े हुए, बिछड़ें हुए गॉवों को।
ढूंढतें – ढूंढते चलते हुए, सोंने जैसे पावों को।
गरीबों के आंगन में जलते हुए दीप जैसे।
अपना जीवन अर्पण किया, मॉ जैसे ममता को
वन्दनम – वन्दनम .....

अनाथों की हालत देख कर, आँसू भरे आंखों को।
बेसहारा लोगों को , लगा लिया बाहों को।
हर पल भी अपने लिए, तड़पते हुए हृदयों को।
पल भर भी अपने लिए सपने देखे प्रियजन को।
वन्दनम – वन्दनम .....

किस मां के बच्चे तुम, किस जगह से आये हो।
हम सब से हिल मिलकर, अपना बनाये हो।
एहसान कैसे, हम आपका चुकाएगें।
एकसाथ साथ कदम मंजिल को पायेंगें।
वन्दनम – वन्दनम .....

हम बदले तो ये जग बदलेगा

हम बदले तो, ये जग बदलेगा।
ये जग बदले जो, ये जगती बदलेगा।
कोई नही बदल रहा, नही सोचना।
पहले अपने लोग बदले, तो अच्छा रहेगा।
हम बदले तो .....

मछली पकड़ के दिये तो, नही बदलेगा।
पहले पकड़ना सिखाओं तो जल्दी बदलेगा।
तैयार करके खाना खिलाय तो बुदिध नहीं आता।
वो काम चोर ना बने, रास्ता दिखाओ।
हम बदले तो .....

ईट – ईट बन के रखे तो घर बनता हैं।
हम मिलजुल के कष्ट सहे तो कार्य होता है।
सही ढंग से जीना हैं तो समूह में जुड़ो।
अपना गरीबी हटाने का प्रयास करो।
हम बदले तो .....

घड़ी – घड़ी मुसीबते

घड़ी–घड़ी मुसीबते, हर दिन तकलीफे।
करूँ मै क्या मेरी बहना, ना समझ हूँ मै बहना।

खुद की मुसीबते, दिल की घड़कन है।
मालूम नही मुझे बहना।
मिल के दर्द बाटे तों दिल हल्का रहेगा, समझ लो प्यारी बहना।
घड़ी–घड़ी मुसीबते .....

मुसीबत वाले एक जगह मिले तो, बुध्दि बढ़ेगी मेरी बहना।
एक सात रहोगे तो एकत बढ़ेगी, इसमें अफसोस क्या बहना
घड़ी–घड़ी मुसीबते .....

धागा – धागा मिलाके तरीके से जोड़े तो, बड़ा रस्सी बनेगी बहना।
बलशाली हाथी भी रस्सी से बन्धेगी। एकता से रहो मेरी बहना
घड़ी–घड़ी मुसीबते .....

गरीबी पाप नहीं जन्मों का श्राप नही, दुखि मत बनों मेरी बहना।
आगे की सोचे तो बहुत बड़ी है ये दुनिया, दुनिया तेरी मुट्ठी में बहना।
घड़ी–घड़ी मुसीबते .....

गॉव जगना चाहिए

गांव जगना चाहिए हर घर जगना चाहिए।
लड़कियों को पढ़ना चाहिए, नव समाज आना चाहिए।
उजाला उजाला उजाला, उजाला होय उजाला।
उजाला उजाला उजाला, उजाला होय उजाला।

पढ़ने से लड़की को ज्ञान बढ़ेगी।
जीवन जीतने के लिए, धीर से लड़ेगी।
पढ़ने वाली लड़की, ज्योति बनेगी।
घर–घर परिवार में रोशनी लायेगी।
गांव जागना चाहिए.....

जनम दिया मां, वो महिला नही क्या।
भाई कहने वाली, औरत नही क्या।
तुमको जीवन साथी, महिला नहीं क्या।
फिर लड़की पैदा होने से, खुशी नहीं क्या।
गांव जागना चाहिए.....

भाई सुनो बहन सुनो

भाई सुनो बहन सुनो गरीब दुखी सब सुनो।
हम सब मिल सकते अच्छा काम कर सकते।
आत्म गौरव ये है आत्म गौरव।

हम भी तो पढ़ सकते, हम भी तो लिख सकते।
हम भी पढ़ा सकते, अच्छा काम कर सकते।
आत्म गौरव ये है आत्म गौरव।
भाई सुनो बहन.....

हम भी तो सोच़ सकते, हम भी तो पूछ सकते।
अन्याय होने पर हम भी तो लड़ सकते।
आत्म गौरव ये है आत्म गौरव।
भाई सुनो बहन.....

समूह एक बन सके, सभी बचत कर सकते।
एक साथ उठ सकते, गरीबी हटा सकते।
आत्म गौरव ये है आत्म गौरव।
भाई सुनो बहन.....

बहना मिलकर समूह बनाना

बहना मिलकर समूह बनाना, जिन्दगी का कौन ठिकाना।
ये जिन्दगी है माटी का ढेला, बून्द पड़े गल जाना।
जिन्दगी का कौन ठिकाना।
बहना मिलकर समूह .....

ये जिन्दगी है चन्दन की लकड़ी, आग लगे जल जाना।
जिन्दगी का कौन ठिकाना।
बहना मिलकर समूह .....

ये जिन्दगी है फुलों की कलियां, धूप लगे मुरझाना।
जिन्दगी का कौन ठिकाना।
बहना मिलकर समूह .....

ये जिन्दगी है कागज की पुड़िया, पवन चले उड़ जाना।
जिन्दगी का कौन ठिकाना।
बहना मिलकर समूह .....

महिला संगठन बनाओं

महिला संगठन बनाओ, बनाओं मेरी बहना।
महिला संगठन बनाओ.....

बनाओं मेरी बहना, जीवन में कुछ तो बचाओ।
बचाओ मेरी बहना, जीवन में कुछ तो बचाओ।
महिला संगठन बनाओ.....

कर्ज से तुम भी डूबी हुई हो, कर्ज से तुम भी मुक्ति पाओ।
पाओ मेरी बहना।
महिला संगठन बनाओ.....

पैरो में तेरी बेड़ी पड़ी है, बेडियों को तोड़कर दिखाओ।
दिखाओ मेरी बहना।
महिला संगठन बनाओ.....

घर और दुनिया पीछे पड़ी है, घर को आगे बढ़ाओ।
बढाओं मेरी बहना ।
महिला संगठन बनाओ.....

अब तक तो तुम पीछे खड़ी हो, आगे तुम चलकर दिखाओ।
दिखाओ मेरी बहना।
महिला संगठन बनाओ.....
बनाओ मेरी बहना जीवन में कुछ तो बचाओ

ये समूह हमारी

ये समूह हमारी, ये समूह हमारी।
अच्छा हो बुरा हो, हम सब की जिम्मेदारी।
घर की परिवार जैसे – ममता से रेहेंगे।
गाड़ी के चक्र जैसे, एक साथ चलेगे।
गरीबों की एकता से मजबूती मिलेगी।
ये समूह हमारी .....

एक साथ बैठकर बात करने आओ।
वेदन–रोदन का कारण समझाओ।
गरीबी हटाने का रास्ता बनाओ।
ये समूह हमारी .....

मुश्किल में हमारे काम आती ये समूह।
कष्टों में मुश्कान लाती है ये समूह।
मुझे – तुझे प्यार से बुलाती है ये समूह।
ये समूह हमारी .....

नशा ना करना मान लो कहना

नशा न करना मान लो कहना प्यारे भाई–बहना।
होगी बड़ी खराबी, होगी बड़ी खराबी।

नशा मे डर है, नशा जहर है, जीते जी मर जाना।
होगी बड़ी खराबी होगी बड़ी खराबी।

दारू न पीना भैय्या पागल फिरोगे तुम बाजार मे।
भुखे मरेंगें बच्चे, बीवी रहेगी इंतजार में।
बिकेंगें गहना फिर क्या कहना, दर दर ठोकर खाना।
होगी बड़ी खराबी, होगी बड़ी खराबी।

बीड़ी ना पीना भैय्या, जलेगा कलेजा बात–बात में।
होठों में होगी अल्सर, नींद ना होगी रात–रात में।
भरी जवानी चौपट होगी, मुश्किल होगा जीना।

गुटखा ना खाना भैय्या, छाले पड़ेगा होठ में।
दांतो में होगा कैन्सर– लाली चढ़ेगी तेरे होठ में।
शर्म लगेगी बात ना होगी, मुश्किल होगा जीना।
होगी बड़ी खराबी, होगी बड़ी खराबी।

हम होंगे कामयाब

हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब एकदिन।
हो–हो मन मे विश्वास, पूरा हैं विश्वास, हम होंगे कामयाब एकदिन।

हम चलेंगें साथ–साथ, डाले हाथों मे हाथ, हम चलेंगें साथ–साथ एकदिन।
हो–हो मन मे विश्वास, पूरा हैं विश्वास, हम होंगे कामयाब एकदिन।

होगी शांति चारो ओर, होगी शांति चारो ओर, होगी शांति चारो ओर एकदिन।
हो–हो मन मे विश्वास, पूरा हैं विश्वास, हम होंगे कामयाब एकदिन।

होगी जीत सच्चाई की, होगी जीत सच्चाई की, होगी जीत सच्चाई की एकदिन।
हो–हो मन मे विश्वास, पूरा हैं विश्वास, हम होंगे कामयाब एकदिन।

युग बदलेगा चारों ओर, युग बदलेगा चारो ओर, युग बदलेगा चारों ओर एकदिन।
हो–हो मन मे विश्वास, पूरा हैं विश्वास, हम होंगे कामयाब एकदिन।

नही डर किसी का आज, नही भय किसी का आज, नहीं डर किसी का आज एकदिन।
हो–हो मन मे विश्वास, पूरा हैं विश्वास, हम होंगे कामयाब एकदिन।

मेरा समूह बड़ा

मेरा समूह बड़ा प्यारा, गरीबी हटाओं बहना।
तेरे समूह को क्या – क्या चाहिए।
मेरे समूह को बहना चाहिए।
मेरा समूह बड़ा .....

तेरे समूह को क्या – क्या चाहिए।
मेरे समूह को बैठक चाहिए।
मेरा समूह बड़ा .....

तेरे समूह को क्या – क्या चाहिए।
मेरे समूह को उपस्थिति चाहिए।
मेरा समूह बड़ा .....

तेरे समूह को क्या – क्या चाहिए।
मेरे समूह को बचत चाहिए।
मेरा समूह बड़ा .....

तेरे समूह को क्या – क्या चाहिए।
मेरे समूह को लेन – देन चाहिए।
मेरा समूह बड़ा .....

तेरे समूह को क्या – क्या चाहिए।
मेरे समूह को हिसाब – किताब चाहिए।
मेरा समूह बड़ा .....

कभी राम बनके कभी श्याम

कभी राम बनके, कभी श्याम बनके।
चले आना प्रभु जी चले आना ।

तुम राम रूप में आना, सीता साथ लेकर, धनुष हाथ लेकर।
चले आना प्रभु जी चले आना।

तुम श्याम रूप में आना, राधा साथ लेकर, मुरली हाथ लेकर।
चले आना प्रभु जी चले आना।

तुम शिव रूप में आना, गौरी साथ लेकर, डमरू हाथ लेकर।
चले आना प्रभु जी चले आना।

तुम विष्णु रूप में आना, लक्ष्मी साथ लेकर, चक्र हाथ लेकर।
चले आना प्रभु जी चले आना।

तुम गणपति रूप में आना, रिदधी साथ लेकर, लड्डू हाथ लेकर।
चले आना प्रभु जी चले आना।

घर–घर अलख जगाएंगे

घर घर अलख जगाएंगे, बदलेगें जमाना।
निश्चय हमारा ध्रुव–सा अटल है।
काया की रग–रग में निष्ठा का बल है।।
जागृति शंख बजाएंगे, बदलेगें जमाना।
घर घर अलख .....

बदली है हमने अपनी दिशाएँ।
मंजिल नई तय करके दिखाएँ।।
धरती को स्वर्ग बनाएँगें, बदलगें जमाना
घर घर अलख .....

श्रम से बनाएंगें माटी को सोना।
जीवन को बनाएंगें उपवन सलोना।
मंगल सुमन खिलाएँगे, बदलेंगें जमाना।
घर घर अलख .....

पीडा पतन की तोड़ेगें सारा।
ममता की निर्मल बहाएंगें धारा।
समता का दीप जलाएंगें, बदलेगें जमाना।
देश महान बनाएंगें, बदलेंगें जमाना।
घर घर अलख .....

जनम जनम का साथ

जनम जनम का साथ है। (तुम्हारा हमारा)
करेंगे सेवा हर जनम में पकड़ो हाथ हमारा।
जनम जनम का.....

जब जब जनम मिलेगी सेवा करेंगे तुम्हारी।
करते है तुमको वादा बहना सथा बनेंगे तुम्हारा।
हर जनम में बढ़कर बहना देना साथ हमारा।
जनम जनम का.....

दुनिया बनाने वाले ये सब तेरी माया।
सूरज, चांद, सितारे ये सब कुछ तूने बनाया।
करते है तुमको वादा बहना साथ बनेगें तुम्हारा।
हर जनम में बढ़कर बहना देना साथ हमारा।
जनम जनम का.....

जब से होश सम्भाली, तब से हमने जाना।
तेरा साथ न मिलता बहना जीवन व्यर्थ हमारा।
बहना हम सब जीते फिरते मारे मारे।
जनम जनम का.....

इसलिये राह संघर्ष की हम चुनें

इसलिये राह संघर्ष की हम चुने, जिन्दगी ऑसुओं में नहाई न हो।
शाम सहमी न हो, रात न हो डरी, भोर की आंख फिर डबडबायी न हो।
इसलिये राह संघर्ष की हम .....

सूर्य पर बादलों का न पहरा रहे, रोशनी रोशनाई में डूबी न हो।
यूं ना ईमान फुटपाथ पर हो खड़ा, हर समय आत्मा सबकी ऊबी न हो।
आसमां में टंगी हो न खुशहालियां, कैद महलों मे सबकी कमाई ना हो।
इसलिये राह संघर्ष की हम .....

कोई अपने खुशी के लिए गैर की, रोटियॉ छीन ले हम नहीं चाहते।
छींटकर थोड़ा चारा कोई, उम्र भर की खुशी छीन ले हम नही चाहते।
हो किसी के लिये मखमली बिस्तरा, और किसी के लिये चटाई ना हो।
इसलिये राह संघर्ष की हम .....

अब तमन्नायें फिर ना करें खुदकुशी, ख्वाब पर खौफ की चौकसी ना रहे।
श्रम के पांवों मे हो ना पड़ी बेड़ियॉ, शक्ति की पीठ अब ज्यादती ना सहें।
दम न तोड़े कहीं भूख से बचपना, रोटियों के लिए अब लड़ाई ना हो।
इसलिये राह संघर्ष की हम .....

गीत गा रहे हैं

गीत गा रहे हैं आज हम, रागिनी को ढूंढते हुए।
आ गऐ यहॉ जवॉ कदम, मंजिलों को ढूंढते हुए।

दो दिलो मे ये उमंग हैं, ये जहॉ नया बसाऍगे।
जिंदगी का दौर आज से, दोस्तो को हम सिखाएंगे।
फूल हम नया खिलाऐंगें, ताजगी को ढूंढते हुऐ।

रोग की तरह दहेज हैं, आज देश में समाज में।
हैं तबाह आज आदमी, लूट पर टिके समाज में।
हम समाज भी बनाएंगें, मानवी को ढूंढते हुए।

फिर न रो सके कोई दुल्हन, जोर–जुल्म का न हो निशा।
मुस्कुरा उठे धरा गगन, हम रचेंगें ऐसी दास्तां।
यूं वतन को हम सजाएंगें, हर खुशी को ढूंढते हुऐ।

मन्दिर मस्जिद गिरजाघर

मन्दिर मस्जिद गिरजाघर मे बॉट लिया भगवान को।
धरती बॉटी, सागर बाटा मत बॉटो इन्सान को।
मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर मे बॉट लिया भगवान को।
धरती बॉटी, सागर .....

हिन्दू कहता मन्दिर मेरा, मन्दिर मेरा धाम हैं।
मुस्लिम कहता, मक्का मेरे अल्लाह का ईमान हैं।
दोनों लडते, लड़–लड़ मरते, लड़ते–लड़ते खत्म हुए।
दोनों ने एक दूजे पे न जाने क्या–क्या जुल्म किये।
किसका मकसद किसकी चाल मिलकर तुम सब जान लो।
धरती बॉटी, सागर .....

नेता ने सत्ता की खातिर कौमवाद से काम किया।
धर्म के ठेकेदार से मिलकर लोगो को नाकाम किया।
भाई बॅटे टुकडे–टुकडे मे, नेता का है मान बढा।
वोट मिले और नेता जीता, शोषण को आधार मिला।
वक्त नहीं बीता हैं अब भी वक्त की कीमत जान लो।
धरती बॉटी, सागर .....

प्रजातंत्र मे प्रजा को लूटे ये कैसी सरकार हैं।
लाठी, गोली, ईश्वर–अल्ला ये सारे हथियार हैं।
इनसे बचो और बच के रहो और लडकर इनसे जीत लो।
हक है तुम्हारा चैन से रहना, अपने हक को छीन लो।
अगर हो तुम शैतानी से तंग तो खत्म करो शैतान को।
धरती बॉटी, सागर .....

मूँह सी के अब जी न पाउंगी जरा सबसे ये कह दो

मूँह सी के अब जी न पाउंगी जरा सबसे ये कह दो।
बाबा कहे बिटिया पढने न जाना ।2।
अपना मैं ज्ञान बढाउंगी।
जरा सबसे ये .....

अम्मा कहे बिटिया शीष झुकाना ।2।
सर को मैं उँचा उठाउँगी।
जरा सबसे ये .....

भैया कहे बहना चौखट न लॉघो ।2।
अब ना गुलामी सह पाउंगी।
जरा सबसे ये .....

दुनिया कहे मुनिया मन की न करना।2।
अपने मैं सपने सजाउँगी।
जरा सबसे ये .....
अपना मैं मान बढाउँगीं।
जरा सबसे ये .....
अपना मैं ज्ञान बढाउंगी।
जरा सबसे ये .....
सर को मैं उँचा उठाउँगी।
जरा सबसे ये .....

अब ना गुलामी सह पाउंगी, जरा सबसे ये .....
मूँह सी के अब जी न पाउंगी जरा सबसे ये कह दो।

जन गण मन

जन गण मन अधिनायक जय हे।
भारत भाग्य–विधाता।।
पंजाब, सिन्धु, गुजरात, मराठा।
द्रविड़, उत्कल बंगा।।
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा।
उच्छल जलाधि तरंग।।
तव शुभ नामे जागे।
तव शुभ आशीष मांगें।।
गाहे तव जय गाथा।
जन–गण मंगलदायक जय हे।
भारत भाग्य–विधाता।।
जय हे, जय हे, जय हे।
जय जय जय जय हे।।

ओ लालो..... ओ लालो

ओ लालो.....ओ लालो.....ओ लालो.....ओ लालो |2।
आंखे खोलकर दरवाजा खोलते ही आंगन बुलाता हैं ओलाला।
आंगन को झाड़कर मूँह हाथ धोते ही मुसल बुलाता हैं ओलाला।
ओ लालो .....

नास्ते की तैयारी करती रहीं तो नल्ला बुलाता हैं ओलाला।
नाले से पानी भरती तो नानी बुलाती हैं।
ओ लालो .....

नानी की सेवा करती रही तो सासु पुकारती हैं ओलाला।
सासु को जवाब देती रही तो ससुर बुलाते हैं ओलाला।
ओ लालो .....

ससुर को दवा देती रही तो झूला बुलाता हैं ओलाला।
झूला में बच्ची सुला रही तो खेती बुलाती हैं ओलाला।
ओ लालो .....

खेती में काम करती रही तो कमर अकड़ गई ओलाला।
कमर के दर्द से घर आई तो फिर काम शुरु हो गयी ओलाला।
ओ लालो .....

साठ साल तक काम करती मैं भूखी बूढ़ी हो गयी ओलाला।
बूढ़ी की हालत कैसे कहू मैं भूखी मरती हूं ओलाला।
ओ लालो .....

भविष्य के बारे में ना सोचेंगे तो खतरे में पड़ेंगे ओलाला।
खतरे से हमें बचना है तो बचत करना है ओलाला।
ओ लालो .....

प्रकाशमय जीवन को विश्वासपूर्ण साथ

प्रकाशमय जीवन को विश्वासपूर्ण साथ हम।
सारे जहां स्वर्ग हो जमीन पर उतारें हम ।2।

गरजते आकाश क्या पहाड़ को हिला सकें।
नदियाँ उभर आयेगी जमीन को घिसा सकें।
एकता के आत्मबल से गगन को झुकाए हम।
सारे जहाँ स्वर्ग हो जमीन पर उतारें हम।
प्रकाशमय जीवन को .....

पत्तें भी झड़ जायेंगे धूप भी रूलायेगा।
बूँद क्या न बरसेगी हरियाली भी ये छाएगी।
मिलकर सारे उम्मीदों को चाहतों को पाये हम।
सारे जहाँ स्वर्ग हो जमीन पर उतारें हम।
प्रकाशमय जीवन को .....

दरिद्रता भी साथ हो रात अंधेरा छाया हो।
हमारे लगन जोर से उजाले को भी पाये हम।
मिली हुई खुशियों को आपस में बाँट लें हम।
सारे जहाँ स्वर्ग हो जमीन पर उतारें हम।
प्रकाशमय जीवन को .....

हमको मन की शक्ति.....

हमको मन की शक्ति देना, मन विजय करें,
दसरों की जय से पहले, खुद को जय करें।
हमको मन की शक्ति .....

भेदभाव अपने मन से साफ कर सकें,
दूसरों से भूल हो तो माफ कर सकें।
झूठ से बचे रहें, सच का दम भरें,
दूसरों की जय से पहले, खुद को जय करें।
हमको मन की शक्ति .....

मुश्किलें पड़ें तो हम पे, इतना कर्म कर,
साथ दें तो धर्म का, चलें तो धर्म पर।
खुद का हौसला रहे, बदी से ना डरें,
दुसरों की जय से पहले, खुद को जय करें।
हमको मन की शक्ति .....

करें राष्ट्र निर्माण.....

करें राष्ट्र–निर्माण बनाएँ मिट्टी से अब सोना–2
शस्य श्यामला सुजला सुफला धरती के हम वासी।
फिर क्यों अपने महादेश की जनता रहे उपासी।
अन्न धान से भर दें अपने घर का कोना–कोना।
करें राष्ट्र.....

गंगा, यमुना यहॉ बहाती हैं अमृत की धारा।
ब्रह्म पुत्र, कृष्णा, कावेरी का जल पय से न्यारा।
पय की धारा से धरती का सूखा भाग भिगोना।
करें राष्ट्र.....

सागर हमको देता अपना दूत जलद गभ्भीरा।
और हिमालय देता हमको शीतल मन्द समीरा।
गर्वोन्नत मस्तक रख कतहा कभी न विचलित होना।
करें राष्ट्र.....

आज हमारे दिव्य देश में, प्रजातंत्र सुखदाई।
प्रजातंत्र का काम प्रजा की होती रहे भलाई।
यहॉ एक ही घाट पियें जल, सिंह और मृगछौना।
करें राष्ट्र.....

स्वप्न स्वर्ग का धरती पर उतरेगा श्रम के द्वारा।
आज पसीने की बूँदों में छिपा भविष्य हमारा।
अब आराम हराम, राष्ट्र से द्रोह का एक पल खोना।
करें राष्ट्र.....

तोड़–तोड़ के बन्धनों को.....

तोड़–तोड़ के बन्धनों को देखो बहनें आती हैं,
ओ देखो लोगों देखो देखो बहनें आती हैं।
आयेंगी, जुल्म मिटायेंगी, वो तो नया जमाना लायेंगी।

तारीकी को तोड़ेंगी वो खामोशी को तोड़ेगी,
हां मेरी बहनें अब खामोंशी को तोड़ेंगी।
मोहताजी और डर को वो मिलकर पीछे छोड़ेंगी,
हॉ मेरी बहनें अब डर को पीछें छोड़ेगी।
निडर, आजाद हो जायेंगी,
अब तो सिसक–सिसक के न रोयेंगी।
तोड़–तोड़ के बन्धनों.....

मिलकर लड़ती जायेंगी वो आगे बढ़ती जायेंगी,
नाचेंगी और गायेंगी वो आगे बढ़ती जायेंगी।
हॉ मेरी बहनें अब मिलकर खुशी मनायेंगी,
गया जमाना पिटने का जी अब गया जमाना मिटने का।
तोड़–तोड़ के बन्धनों.....

लहू का रंग एक.....

लहू का रंग एक है अमीर क्या गरीब क्या,
बने हैं एक खाक से तो दूर क्या करीब क्या।
वही है तन, वही है जां, तुम कब तलक छुपाओगे,
पहन कर रेशमी लिबास तुम बदल न जाओगे।
कि एक जाति है सभी अवर्ण क्या सवर्ण क्या,
लहू का रंग एक है.....

गरीब है वो इसलिए कि तुम अमीर हो गये,
कि एक बादशाह हुआ सौ फकीर हो गये।
खत है तो समाज की, भले बुरे नसीब क्या,
लहू का रंग एक है.....

जो एक हैं तो क्यों न फिर दिलों का दर्द बांट लें,
लहू की प्यास बांट लें, रगों का दर्द बांट लें।
लगा लो सबको तुम गले, हकीम क्या, रकीब क्या,
लहू का रंग एक है.....

साथ–साथ चलेंगे.....

साथ चलेंगे, साथी साथ–साथ चलेंगे,
चांद में सूरज में, पश्चिम में पूरब में।
सड़कों में खेत में, जंगल में रेत में,
साथ चलेंगे.....

पाक से हिन्द तक, गांगा से सिन्ध तक,
ऊँचे पहाड़ में, बाघ की दहाड़ में – 2।
साथ चलेंगे.....

मरने में जीने में, खाने में पीने में,
ऊँचे पहाड़ में, बाघ की दहाड़ में – 2।
साथ चलेंगे.....

रोने मे हँसने में, आजादी में फंसने में,
बोने में काटने में, खाईयों को पाटने में।
साथ चलेंगे.....

फूलों पर राहों में, छूप की छावों में,
फूलों की चांदनी में, चिडियों की रागिनी में।
साथ चलेंगे.....

भाषण में गोष्ठी में, झगड़ों से दोस्ती सें,
तिल तिल चलेंगे, मंजिल तय करेंगे।
चिट्ठी लिखेंगे, चिट्ठी लिखेंगे,
उठेंगे बैठेंगे, विचार तो मिले हैं, दिल भी मिलेंगे।
साथ चलेंगे.....

–: समूह के उत्साहवर्धक नारे :–

- समूह हमारा क्या है – सहारा है।
- समूह हमारा क्या है – सहेली है।
- समूह हमारा क्या है – अवसर है।
- समूह हमारा क्या है – हितैशी है।
- समूह हमारा क्या है – पाठशाला है।
- समूह हमारा क्या है – एक मंच है।
- समूह हमारा क्या है – एक रास्ता है।
- समूह हमारा क्या है – सुरक्षा कवच है।

–: समूह के उत्साहवर्धक नारे :–

- समूह से हमको क्या मिलेगा – जानकारी।
- समूह से हमको क्या मिलेगा – पहचान।
- समूह से हमको क्या मिलेगा – मदद।
- समूह से हमको क्या मिलेगा – अवसर।
- समूह से हमको क्या मिलेगा – उधार।
- समूह से हमको क्या मिलेगा – स्नेह।
- समूह से हमको क्या मिलेगा – खुशी।
- समूह से हमको क्या मिलेगा – ताकत।
- समूह से हमको क्या मिलेगा – गरीबी से आजादी।
- समूह से हमको क्या मिलेगा – मान सम्मान।

–: समूह के उत्साहवर्धक नारे :–

- समूह से क्या बढेगा – एकता।
- समूह से क्या बढेगा – ताकत।
- समूह से क्या बढेगा – हौसला।
- समूह से क्या बढेगा – आत्मविश्वास।
- समूह से क्या बढेगा – सोच।
- समूह से क्या बढेगा – सपना।
- समूह से क्या बढेगा – हुनर।
- समूह से क्या बढेगा – बचत की भावना।
- समूह से क्या बढेगा – आमदनी।
- समूह से क्या बढेगा – घर मे खुशहाली।

–: समूह के उत्साहवर्धक नारे :–

- समूह हमारा क्या आयेगा – विकास।
- समूह हमारा क्या आयेगा – समानता।
- समूह हमारा क्या आयेगा – बदलाव।

स्लोगन

- हाथ कंगन को आरसी क्या,
  पढ़े लिखे को फारसी क्या।
  गाव की महिलाओं ने ठाना है,
  महिला स्व–सहायता समूह बनाना है।
- बिहान का यह नारा है,
  महिलाओं का समूह बनाना है।
  ब्याज अनुदान लेना है,
  आजीविका सुदृढ़ बनाना है।
- गरीबी हटाना है,
  महिला स्व–सहायता समूह बनाना है।
- नारी को जब दोगे मान,
  तभी होगा गांव का कल्याण।
- उठो बहना हमको हैं तैयार रहना,
  महिला अधिकार को हमको हैं लेना।
- सुन लो दीदी सुन लो बहना,
  3 प्रतिशत मे बैंक ऋण लेना।
- गांव गांव अलख जगाना हैं,
  समूह से जुडकर 3 प्रतिशत मे ऋण पाना हैं।
- अब बढेगी महिलाओ की शान,
  आ गया हमारा बिहान।
- सशक्त नारी, सशक्त समाज,
  बिहान समूह की यही आवाज।
- महिला पढेगी, जीवन गढेगी,
  महिला बढेगी, देश बढेगा।
- महिला मिलकर समूह बनाऐगें,
  अपना जीवन उज्जवल बनाऐगें।
- पेड़–पौधे मत करो नष्ट,
  सांस लेने में होगा कष्ट।
- सांसे हो रही हैं कम,
  आओ पेड़ लगाएं हम।
- पर्यावरण है हम सबकी जान,
  इसलिए करो इसका सम्मान।
- बिहान का यह नारा है,
  महिला समूह बनाना है।
  मिलकर कदम उठाना हैं,
  गाव को सुन्दर बनाना हैं।
- जहॉ–जहॉ संघ सभा वहॉ–वहॉ जाना है,
  महिला समूह को आगे बढ़ाना है।
  महिला मिलकर हमें बैठक कराना है,
  महिला मिलकर हमें बचत कराना है।
- नियमित बैठक करना है,
  समूह को सशक्त बनाना है।
  ब्याज अनुदान का लाभ उठाना है,
  आजीविका को मजबूत बनाना है।
- महिलाओं ने ठाना है,
  स्व–सहायता समूह बनाना है।
- स्व सहायता समूह ने ठाना है,
  घर– घर से गरीबी भगाना है।
- राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन आया है,
  आजीविका हेतु ब्याज अनुदान लाया है।
- राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन ने राह दिखाई,
  महिलाओं ने गरीबी हटाने की शक्ति पाई।
- गांव गांव मे समूह बनाना हैं,
  अपना जीवन सफल बनाना हैं।
- गांव गांव मे समूह बनाना हैं,
  अपना जीवन खुशहाल बनाना हैं।
- महिला विकास से गांव विकास,
  गांव विकास से देश विकास ।
- दुनिया को बदलना हैं तो, महिलाओं को बदलना होगा,
  आगे बढना हैं तो संगठित होना होगा।
- समूह की यह पहचान,
  संगठित महिला एवं शक्ति जिसकी शान।
- नहीं मिलेगा जीवन दोबारा,
  प्रदूशण मुक्त हो पर्यावरण हमारा।
- हम सबका एक ही नारा,
  साफ–सुथरा हो देश हमारा।
- जहां – जहां संघ सभा,
  वहां – वहां जाना हैं,
  महिला समूह को आगे बढ़ाना हैं,
  महिला मिलकें बैंको मे जाना हैं,
  ब्याज अनुदान का लाभ उठाना हैं।